वैदिक सभ्यता

परिचय

वैदिक काल उस काल को कहते हैं जिसमें वैदिक ग्रन्थों की रचना की गयी है। इन ग्रन्थों की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि ये एक-दुसरे से सम्बद्ध हैं और इनका क्रमागत विकास हुआ है। सर्वप्रथम ऋग्वेद तथा उसके बाद अन्य वेदों की रचना की गई थी। वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया गया है- ऋग्वैदिक-काल तथा उत्तरवैदिक-काल। इस विभाजन का कारण यह है कि ऋग्वेद की रचना के काफी लम्बे समय के बाद अन्य वेदों की रचना हुयी थी।

ऋग्वैदिक कालीन राजनैतिक व्यवस्था

कुटुम्बों को मिलाकर ग्राम बनता था। ग्राम का प्रधान ग्रामणी कहलाता था। ग्रामों के समूह से एक **विस** की रचना होती थी। विस का प्रधान **विसपति** कहलाता था। कई विस मिलकर एक जन की रचना होती थी जन का रक्षक गोप कहलाता था जो प्रायः स्वयं राजा होता था। ऋग्वैदिक कालीन राजा के कर्तव्य, समिति तथा सभा, न्याय व्यवस्था तथा युद्ध प्रक्रिया आदि का भी वर्णन मिलता है।

ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक व्यवस्था

1. **कौटुम्बिक जीवन-** ऋग्वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार कुटुम्ब था। कुटुम्ब पैतृक होता था और कुटुम्ब का प्रधान दम्पत्ति अथवा गृहपति कहालाता था। अतिथि-सत्कार पर बड़ा जोर दिया जाता था और आतिथ्य की गणना पंच महायज्ञों में की जाती थी।
2. **गृह निर्माण-** ऋग्वैदिक आर्यों के घर बाँस के बने होते थे। इनके बनाने में लकड़ी तथा शरपत्र का भी प्रयोग किया जाता था। प्रत्येक घर में अग्निशाला की व्यवस्था रहती थी जिसमें सदैव अग्नि जलती रहती थी और उसका प्रयोग पुजा-पाठ तथा घरेलू कामों में किया जाता था।

3. **विवाह-** इस काल में विवाह को एक धार्मिक और जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध समझा जाता था। जन साधारण में बहुविवाह की प्रथा का प्रचलन नहीं था।

4. **स्त्रियों की दशा-** इस दशा में यह ऋग्वैदिक काल को स्वर्णयुग कहा जाता है। स्त्रियों की स्थिति बड़ी सन्तोषजनक तथा उच्चकोटी की थी। पत्नी के रूप में स्त्री को परिवार तथा समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त था। उसे पत्नी रूप में गृहिणी तथा पुत्री रूप में दुहिता कहा जाता था। स्त्रियों को भी शिक्षा का अधिकार था जिसके फलस्वरूप गार्गी और मैत्रैयी जैसी विदुषियाँ हुयीं।

5. **वेष-भूषा-** ऋग्वैदिक आर्य सुन्दर वस्त्रों का प्रयोग करते थे। प्रायः तीन प्रकार के वस्त्र पहनते थे। एक नीचे का वस्त्र होता था जिसे **नीवि** कहते थे, दूसरा वस्त्र वास अथवा परिधान कहलाता था। तीसरा वस्त्र अधिवास कहलाता था। पगड़ी का भी प्रयोग था। आभूषणों का भी प्रयोग होता था जैसे- कंगन, नूपुर, गुलूबन्द, कान की बाली आदि का प्रयोग था।

6. **खाद्य पदार्थ-** मुख्य खाद्य पदार्थ दूध था। अनाज़, घी, फल और सब्जियाँ आदि का प्रयोग था। इनके दो पेय पदार्थ भी थे-सुरा और सोम। सुरा एक मादक पदार्थ था जो अन्न से बनाया जाता था ।

7. **आमोद-प्रमोद के साधन-** आमोद-प्रमोद के साधनों में रथ-संचालन तथा द्युतक्रीड़ा मुख्य थे। ऋग्वेद में द्युतक्रीड़ा(जुआ) से सम्बन्धित अक्ष सूक्त प्राप्त होता है।

ऋग्वैदिक कालीन आर्थिक व्यवस्था

1. **कृषि-** ऋग्वैदिक आर्यों का प्रधान कर्म कृषि कर्म था। इस काल में हल के प्रयोग का भी वर्णन है जो कि खेती में प्रयोग किया जाता था। कृषि योग्य भूमि को **उर्वरा** अथवा **क्षेत्र** कहते थे। प्रधानतः जौ और धान की खेती की जाती थी। अनाज बोने से लेकर उसके पकजाने पर उसकी कटाई आदि कार्य भी व्यवस्थित थे।

2. **पशु पालन-** पशुओं में गाय पालन अधिक था। गाय के लिये **अघन्य**(जो मारने योग्य न हो) कहा गया है। कृषि कर्म के लिये बैल का प्रयोग होता था। एक अन्य महत्वपुर्ण पशु अश्व था जिसका प्रयोग रथ-संचालन के लिये था। अन्य पशुओं में भेड़, बकरी तथा कुत्ते आदि का भी वर्णन मिलता है।
3. **व्यापार-** ऋग्वैदिक आर्य व्यापार भी करते थे। वस्तु-विनिमय का प्रयोग था। वस्तुओं का मूल्य गौ से आंका जाता था। बाद में गौ के स्थान पर सोने चाँदी का प्रयोग हो गया था। इस काल में नाव और समुद्र का भी वर्णन मिलता है जो कि सम्भवतः व्यापार के लिये उपयोगी होता हो।

ऋग्वैदिक कालीन कला तथा विज्ञान

ऋग्वैदिक आर्यों को काव्य कला, लेखन कला, संगीत कला, तथा नृत्य कला आदि का ज्ञान था। विद्यार्थियों के द्वारा गुरू द्वारा कहे मन्त्रों को सुनने मात्र से स्मरण किया जाता था। परन्तु बाद में मन्त्रोपदेश की सुरक्षा की दृष्टि से इन्हें लिपिबद्ध किया गया। जो कि लेखन कला को प्रस्तुत करता है।

ऋग्वैदिक कालीन धार्मिक व्यवस्था

प्रकृति उपासना का अत्यधिक महत्त्व था। प्रकृति के अन्तर्गत जल, वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा पृथ्वी, पर्जन्य(बादल), वनस्पतियों तथा मण्डुक(मेंढ़क) आदि की स्तुति की गयी है। **देवताओं का वर्गीकरण** भी देखने को मिलता है। मुख्य रूप से 33 देवताओं का वर्णन मिलता है जो कि पृथ्वीस्थानीय(11), अन्तरिक्षस्थानीय(11) और द्युस्थानीय(11) हैं। वैदिक देवताओं में अग्नि, इन्द्र, सूर्य तथा रुद्रादि प्रमुख देवता हैं।

वैदिक एवं सिंधु सभ्यता में अंतर

1. **निवास संबंधी अन्तर-** वैदिक काल की सभ्यता ग्रामीण तथा कृषि प्रधान थी। इसके विपरीत सिन्धु सभ्यता नगरीय तथा व्यवसाय प्रधान थी। वैदिक कालीन लोग पर्ण-कुटियां आदि में निवास करते थे जबकि सिन्धु सभ्यता के लोग पक्की ईटों के बने हुये भवनों में निवास करते थे तथा साथ ही स्नानागारों का भी वर्णन मिलता है।
2. **धातु के प्रयोग में अन्तर-** वैदिक सभ्यता में सोने-चाँदी का वर्णन मिलता है। सिन्धु सभ्यता में पाषाण का वर्णन अधिक है।
3. **अश्व का प्रयोग-** वैदिक काल में अश्व का प्रयोग है रथ संचालन तथा व्यापार हेतु। सुन्धु सभ्यता में एक-दो बार वर्णन मिलता है वो भी केवल मात्र व्यापार के लिये।
4. **पशु ज्ञान-** वैदिक कालीन लोग व्याघ्र और हस्ति से अपरिचित थे। सिन्धु सभ्यता में इन दोनों का प्रयोग था। वैदिक काल में गाय का महत्व था जबकि सिन्धु सभ्यता में साँड़ का महत्व था।
5. **देवता ज्ञान में अन्तर-** वैदिक काल में मूर्ति पूजा नही थी। प्रकृति की उपासना की जाती थी जिसमें अग्नि, जल तथा वायु आदि की स्तुति की जाती थी। शिव के लिये रुद्र का प्रयोग है। सिन्धु सभ्यता में मूर्ति पूजा तथा लिंग पूजा के प्रमाण भी मिलते हैं।

नोट- दोनों ही सभ्यताओं में अन्तर स्पष्ट करने के लिये दोनों सभ्यताओं की विशेषताओं को पढ़ना होगा। विषय-वस्तु दी गयी है वहां से इसे और अधिक स्पष्ट कीजिये।